तिरूपात्तुर में तपस्या का ठाट

पूजनीया धवल यशस्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएं साध्वी श्री मयुरप्रियाश्रीजी म., साध्वी श्री तत्त्वज्ञलताश्रीजी म., साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. का चातुर्मास तप–त्यागमय चल रहा है। मासक्षमण, सिद्धितप, विहरमान तप का जोरदार वातावरण बना। छोटे संघ में आठ मासक्षमण कीर्तिमान है। मासक्षमण आराधना में आनंदकुमार–सौ.मीनादेवी कवाड़, पदमकुमार–सौ.पिंकीदेवी कवाड़, ललितकुमार–सौ.कविकलादेवी कवाड़, कु. प्रियंका सुरेन्द्रजी कवाड़, सौ.सुनितादेवी गुलेच्छा ने जुडकर कर्मों की निर्जरा की। साथ ही विविध तप में आराधकों ने भाग लिया। –आर.सुषमा कवाड़

मुम्बई में धर्म आराधना का ठाठ लगा

धर्म नगरी मुंबई में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में आयोजित पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में धर्म आराधना का ठाठ लगा है।

ता. 3 अगस्त 2014 को नेम–राजुल के जीवन चरित्र पर आधारित नाटिका का प्रवचन के पश्चात बालक बालिकाओं द्वारा सटीक मंचन किया। जिसमें प्रियंवदा दासी द्वारा जन्म की बधाई, कृष्ण महाराजा एवं सत्यभामा व रुक्मणी रानी द्वारा नेम कुंवर को विवाह हेतु मनाना, नेम कुमार और राजुल के बीच का संवाद, राजुल का बोधा एवं संयम लेने का निर्णय तथा राजुल और नेम कुमार का गिरनार की ओर प्रस्थान जैसे विभिन्न द्रश्यों को देख कर उपस्थित जन समुदाय भाव विभोर हो गया।

10 अगस्त जैन जीवन शैली पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन कपोल वाडी में किया गया। जहाँ गर्भपात, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उपयोग से नुकसान, नरक की गतियाँ, जीवहत्या, अभक्ष्य अनन्तकाय, आठ कर्म, सप्त व्यसन जैसे विभिन्न विषयों पर बच्चों द्वारा वस्तु प्रदर्शन एवं वक्तव्य द्वारा प्रेरणा व खरतरगच्छीय परंपरा से अवगत कराया गया। 1200 व्यक्तियों ने इस प्रदर्शनी का लाभ लिया। सभी ने इस प्रदर्शनी को खूब सराहा। इस प्रदर्शनी की विशेषता थी कि इसका सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण 6 से 15 वर्ष के बच्चों द्वारा किया गया था। यह प्रदर्शन अपने आप में अनूठा था क्योंकि इस तरह का आयोजन समस्त दक्षिण मुंबई में पहली बार किया गया था।

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभक्ति गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जहां 60 से अधिक बच्चों ने देशभक्ति के गीतों से प्रांगण गुंजायमान हो गया।

17 अगस्त को श्री मणिधारी युवा परिषद्, मुंबई द्वारा महा चमत्कारी दादा गुरुदेव के महापूजन का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्वामीवात्सल्य एवं मुख्य पीठिका का लाभ बाडमेर निवासी श्री चम्पालालजी रिखबचंदजी श्रीश्रीमाल परिवार देवडा वालों ने लिया।

31 अगस्त सामूहिक क्षमापना, सात दीक्षार्थी बहिनों का वर्षीदान का वरघोडा व तपस्वीयों का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर स्वामी वात्सल्य का लाभ सांचोर–मुम्बई निवासी श्रीमती शांतिदेवी जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। श्रीसंघ ने सभी दीक्षार्थी बहिनों का बहुमान करते हुये मंगल कामना की।

प्रेषक– धनपत बी. कानुंगो

पचपदरा दादावाड़ी के चुनाव सम्पन्न

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ पचपदरा दादावाड़ी के चुनाव सम्पन्न हुये। संरक्षक पद पर विजयराज ढेलड़िया, घीसुलाल कांकरिया, धनराज चौपड़ा, शंकरलाल चौपड़ा, सुरेश चौपड़ा, अध्यक्ष पद पर धर्मेशकुमार चौपड़ा, भगवानचंद संकलेचा, महावीरकुमार संकलेचा, मंत्री पद पर अशोककुमार ढेलड़िया, कोषाध्यक्ष पद पर आनन्दकुमार चौपड़ा, सहमंत्री पद पर मनीषकुमार संकलेचा, गौतमचन्द ढेलड़िया, रमेशकुमार कांकरिया, सदस्य पद पर गौतमचंद संकलेचा, ओमप्रकाश ढेलड़िया, चन्दनमल चौपड़ा।

प्रेषक – जहाज मंदिर कार्यालय

सदा कुशल साधर्मिक योजना

पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा फरवरी 2015 में श्री पार्श्वमणि तीर्थ पेद्दतुम्बलम;आदोनी आ.प्र.द्ध में **सदा कुशल साधर्मिक योजना** का शुभारम्भ प्रस्तावित है। विशेष जानकारी हेतु सुरेश कोठारी रायपुर 09448023865 एवं कल्पना 09820707621 पर सम्पर्क करें।

पोकरण में हुआ उत्थापन

जैन ट्रस्ट जैसलमेर के तत्वावधान में पोकरण स्थित चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, शांतिनाथ जिनालय व आदेश्वर भगवान जिनालय के दादा गुरुदेव के पगलिये, भैरवदेव, चक्रेश्वरी देवी, पदमावती देवी की प्रतिमाओं का उत्थापन शुक्रवार को विजय मुहुर्त में विधि विधान के साथ नौ अगस्त को संपन्न हुआ। उत्थापन का मुहुर्त प.पू.उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म. द्वारा दिया गया था। इस दौरान जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष महेन्द्रसिंह भंसाली, जैन संस्थान रामदेवरा के ट्रस्टी यशोवर्धनजी गोलेच्छा, सुमेरमलजी जिंदाणी, राजमल जैन, चेतन बम्ब, शांतिलाल बम्ब, सोमपुरा परेश भाई, गोपालजी आदि उपस्थित थे।

जैसलमेर तीर्थ की पंचतीर्थी के अंतर्गत सैकड़ों वर्ष पुराने पोकरण के जैन मंदिर अपनी स्थापत्य कला व आस्था के रूप में जाने जाते है। जर्जर हो रहे जैन मंदिरों का संपूर्ण जीर्णोद्धार गुजरात की जीवणदास गौड़ीदास शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ के सहयोग से होगा।

जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन बाड़मेर में ठाठ

बाड़मेर में श्री जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन में प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास सानंद चल रहा है। 03 अगस्त 2014 को आराधना भवन में सामायिक यात्र में वर्धमान से वर्तमान तक कार्यक्रम की भव्य प्रस्तुति हुई। भगवान नेमिनाथ के जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में यह आयोजन रखा गया था जिसका ध्येय था– भगवान नेमिनाथ की अहिंसा, करूणा एवं समत्व के संदेशों को आम जनता तक पहुंचाना। वर्धमानस्वामी के समय में प्रसिद्ध पुणिया श्रावक की शुद्ध सामायिक एवं वर्तमान समय में की जा रही हमारी सामायिक में बहुत अन्तर आ चुका है। उसी अन्तर व स्वरूप दिखाने के लिए अलग–अलग तीन नाटिकाओं एवं नृत्यों की प्रस्तुति हुई। हर रविवार को दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक बालक बालिकाओं के शिविर के आयोजन में 200 से अधिक बालक बालिकाओं ने भाग लिया। आयोजक परिवार द्वारा सभी को उपहार दिया गया।

32 दिवसीय कषाय जय तप व 16 दिवसीय अष्ट कर्म निवारण तप के 141 तपस्वियों का अन्तिम पारणा चातुर्मास लाभार्थी श्री शांतिलाल नीरजकुमार छाजेड परिवार द्वारा कराया गया एवं प्रभावना वितरीत की गयी।

हुबली में दादावाड़ी प्रतिष्ठा की जाजम संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा व पूज्या मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री आदिनाथ जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी का निर्माण कार्य पिछले 5 वर्ष से गुब्बर रोड पर चल रहा है। जिसकी पावन प्रतिष्ठा ता. 6 दिसम्बर को है। 20 अगस्त को जाजम के चढावे उल्लास के साथ संपन्न हुये। फले चुंदडी का लाभ मुथा बाघमलजी भूराजी बाफणा परिवार मोकलसर वालों ने लिया।

परमात्मा के माता–पिता बनने का लाभ सांचोर–मुम्बई निवासी श्रीमती शांतिदेवी जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया।

नवसारी में तप लहर

पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. के शिष्य पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. एवं मुनि नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा में नवसारी के मणिधारी भवन में चातुर्मास की आराधना उल्लास के साथ चल रही है।

पूज्यश्री की पावन प्रेरणा से छः जन मासक्षमण में जुड़े है। कवीश गोलेच्छा, कैलाशचन्द बोहरा, कु. शर्मिला छाजेड़–दुर्ग, सौ. धूडी देवी सिंघवी, सौ. खुश्बु बोथरा और प्रेमलताबेन मेहता ने मृत्युंजय तप किया है।

पचास दिवसीय श्री पंच परमेष्ठि तप में 35 आराधक भाई–बहिन जुड़कर कर्मो की निर्जरा कर रहे है। तप अनुमोदनार्थ भव्य शोभायात्र दि. 31 अगस्त एवं पारणा महोत्सव 2.9.2014 को है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से तपस्वियों के तप की हार्दिक अनुमोदना।

उपकरण वंदनावली का आयोजन

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. एवं पू. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के दर्शनार्थ श्री नरेन्द्र वाणीगोता पधारें, तब संघ के आग्रह को स्वीकार करते हुए उन्होंने 7 अगस्त को चारित्र उपकरण वंदनावली का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस भव्य वंदनावली कार्यक्रम को देखने के लिये नंदुरबार की जनता उमड़ पड़ी। भाव विभोर होकर जब देवों को दुर्लभ संयम की महिमा का गान करते हुए नरेन्द्र वाणीगोता ने एक–एक उपकरण की वंदना करवायी तो संघ का प्रत्येक व्यक्ति संयमी भावों से भर गया। उस समय प्रत्येक व्यक्ति संयम की संवेदना में डूबकर चिंतन करने लगा कि जल्दी ही संयम की प्राप्ति हो। श्रीसंघ ने श्रीफल, माला एवं रत्नमयी अंगुठी द्वारा श्री वाणीगोता का बहुमान किया।

31वीं ओली का पारणा संपन्न

परम पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के वर्धमान तप की 31वीं ओली का पारणा 11 अगस्त को सानंद सम्पन्न हुआ। यद्यपि संघ की भावना थी कि पारणे की बोली लगायी जाये परंतु गुरुवर्याश्री की भावना नहीं होने से पारणे का लाभ सौ. पुष्पादेवी बाबुलालजी तातेड़ को प्राप्त हुआ। यह लाभ प्राप्त करने के लिये ही उन्होंने 11 उपवास की तपश्चर्या सम्पन्न की।

सकल श्रीसंघ के साथ पुजनीया गुरुवर्याश्री आदि साध्वीजी भगंवत लाभार्थी परिवार के घर पधारे एवं पारणे का लाभ प्रदान किया। इस अवसर पर तातेड़ परिवार द्वारा संघ पूजन किया गया।

दिल्ली छोटी दादावाडी

पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या तपस्वीरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा–5 का चातुर्मास दिल्ली स्थित श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी में आराधना के साथ गतिमान् है। आपके प्रवचनों से श्रीसंघ लाभान्वित हो रहा है। पर्युषण महापर्व में आराधना और तपस्या का ठाठ लगा है। पूजनीया गुरुवर्या श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. ने 16 उपवास की तपस्या की है। उनका पारणा भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को सानन्द संपन्न हुआ है।

बीजापुर में पंचार्हिका महोत्सव

महत्तरा पद विभूषिता पूज्या श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. की पावन निश्रा में बीजापुर में जिनशासन की जाहोजलाली जारी है।

जब से चातुर्मास प्रारम्भ हुआ है तब से बीजापुर में प्रवचन, शिबीर विविध संगोष्ठियों की माध्यम से सभी के हृदय में आनंद का वातावरण छाया हुआ है। पूज्या तपस्वी साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. ने आत्मशक्ति का परिचय देते हुये सिद्धितप की आराधना की, जो अनुमोदनीय है। साथ ही श्री रमेशभाई बाफना और सौ. लतादेवी सांखला ने मासक्षमण तप कर साधना की।

सिद्धितप की तपाराधना में 12 आराधकों ने जुडकर चातुर्मास को सफल बनाया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से तपस्वियों के तप की हार्दिक अनुमोदना।

बालिका मण्डल की द्वितीय वर्षगांठ मनाई

कुशल हेम बालिका मण्डल चौहटन की द्वितीय वर्षगांठ स्थानीय शांतिनाथ उपासरे में पूज्य मुनिराज मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में धुमधाम से मनाई गई। मुनिराज ने बालिकाओं को धर्ममयी एवं समतामयी जीवन का उपदेश दिया।

इस अवसर पर नाकोड़ा जैन तीर्थ के अध्यक्ष श्रीमान अमृतलालजी छाजेड़, एडवोकेट जैठमल जैन, प्रोफेसर डॉ. बंशीधर तातेड, चौहटन सरपंच मोहनलाल सोनी ने अतिथि पद को सुशोभित करते हुए बालिका मण्डल के उज्जवल भविष्य की कामना की। संचालिका सोना छाजेड़ एवं अध्यक्ष रचना मालू ने मण्डल की दो वर्ष की गतिविधियों की जानकारी दी। बालिकाओं ने हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती में भाषण के साथ रंगा–रंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन कविता धारीवाल एवं गौतम भंसाली द्वारा किया गया।

चौहटन में पर्वाधिराज पर्युषण आराधना

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व चौहटन में बड़े भक्ति भावना एवं तपस्या के साथ मनाए गए। नौ दिन तक चलने वाली आराधना में प्रातः देवदर्शन, पूजा, प्रवचन, दोपहर में भगवान की पूजा, सांयकालीन प्रतिक्रमण रात्रीकालीन भक्तिसंध्या आदि में श्रावक–श्राविकाओं का हुजूम उमड़ पड़ता था। महावीर जन्म–वाचन में भी श्रावक–श्राविकाओं ने बढ–चढकर बोलियां लगाई। अन्तिम दिन कस्बे में भव्य वरघोड़ा निकाला गया। वरघोड़े में झांकियां, रथ, भगवान की पालकी, बैण्ड, पंचरंगी पताकाएं लिए हुए बालक–बालिका मण्डल महिला–पुरुष लम्बे काफिले के साथ वरघोड़े की शोभा बढा रहे थे। थे। वरघोड़ा कस्बे के मुख्य मार्गों पार्श्वनाथ जिनालय, जिनकुशल दादावाड़ी से होता हुए शान्तिनाथ उपासरे में धर्मसभा में तब्दील हुआ।

इस अवसर पर मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने अपने संदेश में तपस्वियों एवं सभी को अपने मन के कषाय दूर कर निर्मल एवं पावन विचारों से युक्त जीवन जीने का आह्वान किया। मुनिराज ने कहा कि पर्युषण के नौ दिन तक आपके मन में जो भाव रहे वे नित्य प्रतिदिन और प्रति पल हमारे जीवन का आन्तरिक सौन्दर्य बढ़ाते रहे ताकि भौतिक जीवन से विरक्त हो एवं संयमित जीवन का प्रादुर्भाव हो सकें।

पर्युषण पर्व में नौ दिन तक तपस्या करने वाले महिला–पुरुषों को श्रीसंघ एवं चातुर्मास कमेटी द्वारा बहुमान कर उनके तप की भावभरी अनुमोदना की गई। संघ अध्यक्ष डॉ. मोहनलाल डोसी ने सबका आभार व्यक्त किया। पर्युषण महापर्व को सफल बनाने में कुशल हेम बालिका मण्डल, महिला मण्डल, युवा परिषद्, शांतिनाथ मणिधारी मण्डल, जैन मित्र मण्डल, सोहनलाल डोसी, महावीर धारिवाल, विपिन भंसाली, सुजल सेठिया, पियुष धारिवाल, अमित सेठिया, गौतम भंसाली, सोना छाजेड़, कोमल धारीवाल, मदनलाल छाजेड़ एवं मदनलाल सेठिया आदि ने सेवाएं दी। अन्त में हीरालाल धारीवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रत्याख्यान भाष्य पुस्तक पर खुली किताब परिक्षा

पू. गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित प्रत्याख्यान भाष्य विवेचन प्रश्नोत्तरी की पुस्तक पर श्री जैन श्वे. मणिाारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ के तत्वावधान में **खुली किताब परिक्षा** का आयोजन किया गया है। यह पुस्तक पच्चक्खान के भेद–प्रभेद, स्वरूप, महता, आगार आदि अनेक बिंदुओं का स्पर्श करने वाली उपयोगी पुस्तक है।

प्रश्न पत्र का संयोजन पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने किया है। प्रथम तीन पुरस्कार 5100, 3100 एवं 2100 रुपये के रखे गये हैं। रुपये 300–300 के सात अभिनंदन पुरस्कार और समस्त प्रतियोगियों को सत्कार पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार प्रायोजक श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़–इचलकरंजी है। एक ैमज का मूल्य मात्र 50 रुपये रखा गया है। प्राप्त करने हेतु संपर्क करे–

श्री बाबूलालजी मालू – 098503 16237
श्री रमेशजी भंसाली – 094232 78876
श्री रमेशजी छाजेड़ – 094232 84725

पर्युषण पर्व आराधना का ठाठ

पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि एवं पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की सानिध्यता में अत्यन्त उल्लास एवं आनंद के साथ पर्युषण महापर्व की आराधना सम्पन्न हुई।

22–23 अगस्त को पूज्यश्री ने पर्युषण पर्व के पांच कर्त्तव्यों की व्याख्या की।

24 अगस्त को कल्पसूत्र के विवेचन का प्रारम्भ पूज्य उपाध्यायश्री ने किया। कल्पसूत्र का महत्व एवं परमात्मा महावीर के पूर्वभवों की विवेचना अपने आप में अनूठी थी। लम्बे–लम्बे प्रवचनों में भी जनसमूह की पूर्ण उपस्थिति रही।

26 अगस्त को चौदह स्वप्न, पालनाजी आदि के चढ़ावों ने एक कीर्तिमान स्थापित किया। जन्मवांचन का पूर्ण उल्लास रहा।

27 अगस्त को परमात्मा महावीर के विशिष्ट जीवन पर अत्यन्त मनमोहक शैली में पूज्यश्री ने जो व्याख्या की, उससे जनसमूह अचंभित रह गया।

28 अगस्त को स्थविरावाली, समाचारी आदि का प्रवचन भी अनुपम रहा।

29 अगस्त को संवत्सरी थी। पौषध लेने वालों की विशाल संख्या, मूल बारसा सूत्र का वांचन, संवत्सरी का महाप्रतिक्रमण, सब कुछ अद्वितीय रहा।

कल्पसूत्र वोहराने का लाभ चंपालालजी गौतमचंदजी वडेरा परिवार ने, बारसा सूत्र वोहराने का लाभ सूरजमलजी जगदीशचंदजी छाजेड़, पालना घर ले जाने का लाभ नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़ परिवार ने लिया।

पर्युषण पर्व की आराधना करने के लिये चेन्नई, उटी, अक्कलकुवा, नंदुरबार, अमलनेर, बिजयनगर, हैदराबाद, मैसुर, रेणीगुंटा, बाडमेर, अहमदाबाद, मुम्बई आदि स्थानों से श्रावक–श्राविकाओं का आगमन हुआ।

कुल मिलाकर सम्पूर्ण इचलकरंजी का कथन रहा कि ऐसे प्रवचन पहली बार सुने और ऐसा पर्युषण पर्व पहली बार मनाया।

सामूहिक क्षमापना निमित दि. 31 अगस्त को स्वामीवात्सल्य का लाभ श्री बाबूलालजी तेजराजजी प्रकाशजी रमेशकुमार मंथन लूंकड़ मोकलसर वालों ने लिया।

तपश्चर्या का वातावरण

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में एवं पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. की सानिध्यता में तपश्चर्या का जोरदार ठाठ लगा।

पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म.सा. व पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. ने अट्ठाई की।

सौ. मंजूदेवी मांगीलालजी बागरेचा एवं कु. अक्शु मगराजजी भंसाली ने मासक्षमण की महान तपश्चर्या की। सौ. कांतादेवी जगदीशजी छाजेड़, सौ. पुष्पादेवी बाबुलालजी मेहता, सौ. भावनादेवी मोहनलालजी ढेलड़िया, सौ. नीतूदेवी शैलेशकुमारजी ललवानी, कु. शितल बाबुलालजी हिरण एवं चैन्नई निवासी प्रकाशजी लोढ़ा ने सिद्धितप की सिद्धिदायिनी तपश्चर्या की।

श्री तेजराजजी कोठारी चैन्नई एवं श्री मेवारामजी संकलेचा ने चौसठ प्रहरी पौषध के साथ अट्ठाई की महान तपश्चर्या की।

पूज्यश्री की जिनवाणी के प्रभाव से हमारे संघ में मासक्षमण, सिद्धितप, ग्यारह उपवास, दस उपवास, नव उपवास, अठाई, बीस स्थानक तप, चिन्तामणि तप, क्षीरसमुद्र तप, छट , अट म आदि तपस्याओं से इचलकंरजी नगर तपोमय बन गया।

तपस्वियों के पारणा करवाने का लाभ मीठालालजी महावीरकुमार अरुणकुमार लुंकड परिवार सिवाणा वालों ने लिया।

राजस्थान संघ में पर्युषण आराधना

पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. शिष्य पू. मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के द्वारा श्री राजस्थान जैन श्वे.मू.पू. संघ इचलकरंजी में पर्युषण महापर्व की आराधना अत्यन्त उल्लास से सम्पन्न हुई।

पर्युषण की महिमा, कल्पसूत्र की महानता, परमात्मा महावीर का जीवन चरित्र, क्षमापना आदि प्रवचनों से सकल संघ अत्यन्त प्रभावित हुआ। शांति एवं अनुशासन–पद्धति उनके प्रवचनों से पहली बार श्रीसंघ में देखी गई।

उन्होंने क्षमापना के दिन विविध प्रकार के मिच्छामि दुक्कड दिलवाते हुए कहा– क्षमा धर्म की माँ है। जिस प्रकार एक शिशु माँ की गोद में आकर निश्चिंत हो जाता है वैसे ही संसार के दुःखों से त्रस्त व्यक्ति धर्म एवं क्षमा रूपी माता की गोद पाकर चिन्तामुक्त हो जाता है। क्षमा के कारण ही मृगावती और चन्दनबाला ने कैवल्य का हीरा पाया। यह क्षमा संघ, समाज और परिवार में तो शांति कायम करने का सूत्र है ही, साथ ही साथ मोक्षमार्ग का पहला पगथिया भी है।

इचलकरंजी में आराधना का अभूतपूर्व माहौल

पू. आचार्य देवश्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. के शिष्य पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा–7 की पावन निश्रा में एवं पू.बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री जी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा–4 की पावन सानिध्यता में चातुर्मास का अभूतपूर्व ठाठ लगा हुआ है। धर्मबिंदु प्रकरण एवं महाबल–मलयासुंदरी कथानक वोहराने का लाभ क्रमशः शा. बाबुलालजी रमेशकुमार लुंकड़ मोकलसर व शा. चंपालालजी गौतमचंदजी वडेरा परिवार बाडमेर वालों ने लिया।

1. अठारह पाप स्थानक आलोचना

21–22 जुलाई 2014 को अठारह पाप स्थानक आलोचना का एक अत्यन्त संवेदनशील कार्यक्रम हुआ। पू. उपाध्यायश्री ने कहा कि हमारे द्वारा दिनभर जाने अनजाने पापों का सेवन होता रहता है और पापों का बंधन ही जीवन को पीडध्मय बनाता है। यह कार्यक्रम अपने भीतर में झोंकने की प्रेरणा देता है।

पू. मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा रचित पद्यावली का सामूहिक रूप से संगान किया गया। पू. मुनिश्री ने अठारह पाप स्थानकों की विवेचना करते हुए कहा– पाप करना या हो जाना मनुष्य की स्वाभाविक कमजोरी है परन्तु उनका निश्छल मन से प्रायश्चित्त करना एक बहुत बड़ी खुबी है। यह कार्यक्रम एक ऐसा साबुन है जिसके द्वारा आत्मा पर लगे सारे पाप धुल सकते हैं।

2. संयम उपकरण वंदनावली

29–30 जुलाई 2014 को संयम उपकरण वंदनावली का आध्यात्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूज्यश्री ने संयम का महत्व समझाते हुए कहा– संयम बिना मुक्ति नहीं है। जो सुख चक्रवर्ती, देवेन्द्र, नरेन्द्र भौतिकी सम्पन्नता में अनुभव करते हैं, उससे अनन्त गुणा सुख का अनुभव एक त्यागी, निस्पृह, अंकिचन मुनि संयम साधना में करता है।

पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा रचित पद्यावली भावपूर्ण संगान साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. के साथ सामूहिक रूप से किया गया।

पू. मुनिश्री ने संचालन करते हुए कहा– संयम यद्यपि एक छोटा सा शब्द है पर इसकी शक्ति अनन्त है। इस दिव्य अस्त्र के द्वारा चिलाती पुत्र, दृढ़ प्रहारी, अर्जुनमाली जैसे पापी जीव भी अल्पावधि में कर्ममुक्त होकर मोक्षगामी हो गये। उन्होंने एक–एक उपकरण की महिमा व्याख्या करते हुए सम्पूर्ण वातावरण को संयममय बना दिया। उपकरणों को घर ले जाने के रिकॉर्ड चढावे हुए।

विभिन्न संयम उपकरण के लाभार्थी– रजोहरण वंदना– 3 वर्ष में 15555 सामायिक–दीपचंद नेमीचंद भंसाली समदड़ी, अणगार वेश वंदना– 5 वर्ष में 7002 प्रतिक्रमण–संघवी माणकचंद शांतिलाल ललवानी गढ़ सिवाना, मुंहपत्ति वंदना–2 वर्ष में 10002 घंटा मौनव्रत–रतनलाल बदामी देवी बोथरा हैदराबाद, आसन वंदना–5 वर्ष में नीवी–शांतिलाल प्रेमचन्द भंसाली असाड़ा, पातरा वंदना–10 वर्ष में 6002 एकासन–शिवलाल रिखबचंद ललवानी सिवाना, स्थापनाचार्य वंदना–5 वर्ष में 16666 सामायिक–हनुमानचंद भीमराज छाजेड़ समदड़ी, स्वाध्याय पोथी वंदना– 2 वर्ष में 5100 घंटा स्वाध्याय–सुरेशकुमार अशोककुमार मुथा सिवाना, नवकारवाली वंदना–2 वर्ष में 61000 पक्की माला–छगनराज महेन्द्रकुमार लुंकड़ राखी, धर्म दण्ड वंदना– 5 वर्ष में 15001 पूजा–दीपचंद नेमीचंद भंसाली समदड़ी, दण्डासन वंदना– 2 वर्ष में 44444 गाथा स्वाध्याय–दीक्षार्थी संयम सेठिया चैन्नई, पुंजनी वंदना–4 वर्ष में 6000 बियासना–हीराचंद मांगीलाल बागरेचा सिवाना, संथारा वंदना– दो लाभार्थी 5 वर्ष में 7000 बार संथारे पर शयन– कमलेशकुमार भीकमचंद छाजेड़ सिवाना तथा पुखराज उदयराज ललवानी सिवाना। पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा संयम के उपकरण लाभार्थी परिवारों को सुपुर्द किए गए।

श्री दादा गुरुदेव महापूजन संपन्न

10 अगस्त को रक्षाबंधन के पावन पर्व पर कलिकाल कल्पतरू दादा गुरूदेव के महापूजन का भक्ति भावभरा भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के लाभार्थी थे– श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़ परिवार–इचलकरंजी–बाड़मेर।

पू. उपाध्याय प्रवर द्वारा रचित इस महापूजन में 111 युगल ने भाग लिया। लाभार्थी छाजेड परिवार द्वारा उन्हें पूजन सामग्री, यंत्र आदि प्रदान किये गये।

पूज्य उपाध्यायश्री ने दादा गुरुदेव की महिमा से परिचित करवाते हुए कहा– 'दादा' का संबोधन आज तक चार आचार्यों को ही मिला। भारतभर में लगभग 15000 से अधिक चरण पादुकाओं एवं हजारों स्वतन्त्र दादावाड़ियों का निर्माण उनकी चारित्र–निष्ठा का ही सद्परिणाम है। उन्होंने जब धागा अभिमंत्रित करने का मंत्र अपने विशिष्ट अंदाज में फरमाया, तब सारा वातावरण दादा गुरुदेव–मय बन गया। पू. मुनिश्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. ने महापूजन का संचालन करते हुए परमात्मा महावीर, पाटण, स्तंभन, लोद्रवा, कापरडा, नाकोडा तीर्थ, गणधर गौतमस्वामी आदि का सारगर्भित वर्णन करते हुये सारे विधि–विधान करवाये एवं दादा गुरुदेव के दिव्य–भव्य जीवन पर प्रकाश डाला। महापूजन में भक्ति में झुमाने के लिये श्री लवेश बुरड का आगमन हुआ।

नवप्रभात

0 उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

अभी अभी हमने संवत्सरी महापर्व को जीया है। जीते तो प्रतिवर्ष हैं। पर इस बार का मन थोडा अलग था। गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष का मन एक साल बडा हो गया था। इस कारण थोडा अनुभवी भी हो चला था।

अनुभव ने मेरे मन को बहुत सिखाया है। इस कारण मन काफी बदल गया है।

हर वर्ष की भांति इस बार भी वे सभी औपचारिकताऐं हुई हैं। बहुत बार औपचारिक व्यवहार को औपचारिक संज्ञा देकर उसके मूल्य को कम करने का प्रयत्न करते हैं। जबकि ऐसा है नहीं!

औपचारिक कब अनौपचारिक हो जायेगा, पता भी नहीं चलेगा!

व्यवहार कब निश्चय में बदल जायेगा, ख्याल भी नहीं आ पायेगा!

दिखावे के लिये किया गया व्यवहार कब हृदय–परिवर्तन का आधार बन जायेगा, बोध भी नहीं हो पायेगा!

इसलिये औपचारिक व्यवहार जरूरी भी है। सारे औपचारिक व्यवहार... शब्दावली... जरूरी है ताकि दुर्भावनाओं का मेला.. कुचेला धरातल धुलता रहे, घिसता रहे और एक दिन स्वच्छ और चमत्कार बन जाये।

संवत्सरी का प्रतिक्रमण करके सब जीवों के साथ क्षमापना की है। क्षमा दी है... क्षमा ली है!

और मैं विचारों में डूब गया हूँ। क्षमा की मूल परिभाषा क्या है! और क्षमा का परिणाम क्या है! मैं परिभाषा और परिणाम का चिंतन करने लगा हूँ।

परिभाषा तो स्पष्ट है कि अपनी गल्तियों के लिये क्षमा मांगना और दूसरों को उनकी गल्तियों के लिये क्षमा करना, यह क्षमापना की परिभाषा है।

पर परिणाम क्या है, यह विचार थोडा गहरा प्रतीत होने लगा है।

मैं दूसरों को क्षमा करता हूँ, इसलिये नहीं कि वे क्षमा के हकदार हैं। बल्कि इसलिये कि मैं शांति का हकदार हूँ!

मैं दूसरों से क्षमा मांगता हूँ, इसलिये नहीं कि मैंने गल्तियाँ की हैं, बल्कि इसलिये कि मैं शांति का पक्षधार हूँ।

इन वाक्यों के स्पष्ट होते ही परिणाम की व्याख्या समझ में आ गयी। क्षमापना का परिणाम शांति है। शांति चाहिये, उसे प्राप्त करने के लिये जो करना पडे, करो, पर शांति पाओ! यही पर्युषण महापर्व का संदेश है।

जटाशंकर

0 उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

जटाशंकर बहुत उदास था। उसकी ऐसी स्थिति देख कर उसके दोस्त घटाशंकर ने पूछा– क्या बात है! उदास क्यों हो! क्या समस्या है!

जटाशंकर ने खिन्न स्वरों से कहा– बहुत बडी समस्या हो गई है। पहले घी 100 रूपये किलो मिलता था। अब 80 रूपये हो गया है!

घटाशंकर बोला– तो उसमें तुम्हें क्या समस्या है! तुम घी का व्यापार तो करते नहीं, जो सस्ता होने के कारण घबरा रहे हो! तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिये कि घी सस्ता हो गया है। एक किलो घी खरीदने पर 20 रूपये बचेंगे।

जटाशंकर बोला– अरे! मैं तो घी खाता ही नहीं हूँ! पर पहले मैं घी न खाकर सौ रूपये बचाता था। अब केवल 80 रूपये ही बचेंगे। इसी कारण मैं उदास हूँ।

यह उदासी काल्पनिक है। हम भी इसी प्रकार काल्पनिक कारणों से ही सुखी अथवा दुखी होते हैं। सुख दुख का कोई विशेष आधार नहीं है। इस निराधार सुख दुख को जीवन से निष्कासित करना ही आनंदित... प्रसन्न जीवन का मूल मंत्र है।